अध्याय 35

एलीहू द्वारा परमेश्वर की खामोशी का कारण बताना

अध्याय 35 में, एलीहू ने परमेश्वर की खामोशी का बचाव यह तर्क देते हुए किया कि सुनवाई की अय्यूब की मांग का आधार उसका घमण्ड था। मनुष्यजाति परमेश्वर के सामने कोई मांग नहीं रख सकती है। न तो हमारी धार्मिकता और न हमारा अपराध उसके सामने मांगें रख सकता है।

''अय्यूब की बातें ढिठाई की हैं'' (35:1-8)

[1]फिर एलीहू इस प्रकार और भी कहता गया, [2]''क्या तू इसे अपना हक़ समझता है? क्या तू दावा करता है कि तेरा धर्म परमेश्वर के धर्म से अधिक है? [3]जो तू कहता है, 'मुझे इस से क्या लाभ? मुझे पापी होने में और न होने में कौन सा अधिक अन्तर है?' [4]मैं तुझे और तेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता हूँ। [5]आकाश की ओर दृष्टि करके देख; और आकाशमण्डल को ताक, जो तुझ से ऊँचा है। [6]यदि तू ने पाप किया है तो परमेश्वर का क्या बिगड़ता है? यदि तेरे अपराध बहुत बढ़ जाएँ तौभी तू उसका क्या कर लेगा? [7]यदि तू धर्मी है तो उसको क्या दे देता है; या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है? [8]तेरी दुष्टता का फल तुझ जैसे पुरुष के लिये है, और तेरे धर्म का फल भी मनुष्य मात्र के लिये है।''

आयतें 1, 2. धर्म (*tsedeq, सेडेक़*) पुस्तक में अय्यूब के ''सही,'' ''निर्दोष'' या ''पाप का दोषी नहीं'' होने का दावा करने के अर्थ के लिए आम तौर पर इस्तेमाल हुआ है। वास्तव में उसने कहा था, ''मैं परमेश्वर के जीवन की शपथ खाता हूँ जिसने मेरा न्याय बिगाड़ दिया, अर्थात् उस सर्वशक्तिमान के जीवन की जिसने मेरा प्राण कड़ुआ कर दिया। ... ईश्वर न करे कि मैं तुम लोगों को सच्चा ठहराऊँ, जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक मैं अपनी खराई से न हटूँगा'' (27:2, 5)।

एलीहू ने अय्यूब पर झूठे दावे करन का आरोप लगाया। परन्तु अय्यूब ने कहीं पर भी यह नहीं कहा कि उसका धर्म (धार्मिकता) **परमेश्वर के धर्म से अधिक** था। तौभी उसने अपने निर्दोष होने का बचाव पूरे तनमन से किया, पर परमेश्वर पर उसके साथ अनुचित ढंग से व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए। जिससे एलीहू ने यह निष्कर्ष निकाल लिया कि अय्यूब को लगता था कि वह परमेश्वर से अधिक धर्मी है।

आयत 3. ''जो तू कहता है, 'मुझे इस से क्या लाभ? मुझे पापी होने में और न होने में कौन सा अधिक अन्तर है?''' यह आयत एक सवाल खड़ा करती है ''अच्छा बनने से क्या लाभ है?'' (देखें 34:9)। अपने दुःख सहने के दौरान अय्यूब ने पूछा था, ''मैं तो दोषी ठहरूँगा;

फिर व्यर्थ क्यों परिश्रम करूँ?'' (9:29)। ''एलीहू ने नैतिक व्यवहार के महत्व पर सवाल उठाने की बात को लेकर इसे जहां तक हो सका अपमानपूर्ण बनाने के लिए अपनी शिकायत की।''[1] फ्रांसिस आई. एंडरसन ने टिप्पणी की है, ''एलीहू की यह मानने की कि परमेश्वर भले मनुष्य के साथ आनन्दित हो सकता है और पाप से शोकित परमेश्वर की पर्याप्त समझ के साथ व्यक्तिगत समझ नहीं है।''[2] एलीहू का परमेश्वर दूर का देवता था जो दुष्टों को उत्तर नहीं देता था, तब भी जब वे उसके सामने गिड़गिड़ाते थे।

आयत 4. ''तुझे और तेरे साथियों को भी एक संग उत्तर देता हूँ।'' परमेश्वर ने अय्यूब को उत्तर नहीं दिया उसकी ओर से एलीहू उत्तर देता था! होमेर हेली की टिप्पणी है, ''अध्याय 32, 34 की वही गुस्ताख अपने आपको यकीन दिलाने वाली बात सामने आ गई एलीहू ने अपने किसी अहम को नहीं छोड़ा है।''[3]

आयत 5. एलीहू ने मनुष्यजति के छोटा होने पर ज़ोर देने के लिए सृष्टि के क्रम की ओर ध्यान दिलाया। जब हम आकाश की ओर निगाह करके **आकाश मण्डल** को देखते हैं तो हम अक्सर अभिभूत हो जाते हैं। भजनकार ने लिखा है, ''जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तरागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?'' (भजन संहिता 8:3, 4)।

आयत 6. ''यदि तू ने पाप किया है तो परमेश्वर का क्या बिगड़ता है? यदि तेरे अपराध बहुत बढ़ जाएँ तौभी तू उसका क्या कर लेगा?'' ''बहुत'' का अनुवाद ''कई गुणा'' (NRSV) भी हो सकता है। विलियम डी. रेबर्न ने लिखा है '' *कई गुणा* का अर्थ है बारम्बार, बार-बार, कई बार।''[4] एलीहू ने तर्क दिया कि परमेश्वर इतना महान है कि उसे मनुष्य के पाप से कोई असर नहीं पड़ता। चाहे इसका ''ढेर लग जाए'' (NJB)।

आयत 7. ''यदि तू धर्मी है तो उसको क्या दे देता है; या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है?'' इसी प्रकार से मनुष्य इतनी भलाई नहीं कर सकता जिससे वह परमेश्वर को अपना कर्जदार बना सके। परमेश्वर मनुष्य से स्वतन्त्र रूप में अलग है और इस कारण उसे मनुष्य से कोई लाभ नहीं मिलता या वह उसके किसी काम नहीं आ सकता (देखें 22:2, 3)।

आयत 8. ''तेरी दुष्टता का फल तुझ जैसे पुरुष के लिये है, और तेरे धर्म का फल भी मनुष्य मात्र के लिये है।'' जॉन ई. हार्टले ने बताया है, ''परन्तु भले या बुरे के लिए मनुष्य के कामों का समाज में परिणाम मिलता है। ... एलीहू का तर्क यह नहीं है कि नैतिक कामों का कोई आत्मिक महत्व नहीं है बल्कि यह है कि उन्हें परमेश्वर को मनाने या विवश करने के लिए इस्तेमाल में नहीं लाया जा सकता।''[5]

''परमेश्वर मनुष्य के घमण्ड के कारण उत्तर नहीं देता'' (35:9-16)

[9]''बहुत अन्धेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं; और बलवान के बाहुबल के कारण वे दोहाई देते हैं। [10]तौभी कोई यह नहीं कहता, 'मेरा सृजनेवाला परमेश्वर कहाँ है, जो रात में भी गीत गवाता है; [11]जो हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता, और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है?' [12]वे दोहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर नहीं देता, यह बुरे

लोगों के घमण्ड के कारण होता है। [13]निश्चय परमेश्वर व्यर्थ बातें कभी नहीं सुनता, और न सर्वशक्तिमान उन पर चित्त लगाता है। [14]तो तू क्यों कहता है, कि वह मुझे दर्शन नहीं देता, कि यह मुक़द्दमा उसके सामने है, और तू उसकी बाट जोहता हुआ ठहरा है? [15]परन्तु अभी तो उसने क्रोध करके दण्ड नहीं दिया है, और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं लगाया; [16]इस कारण अय्यूब व्यर्थ मुँह खोलकर अज्ञानता की बातें बहुत बनाता है।''

एलीहू इस बात पर अड़ा रहा कि परमेश्वर को कुटिल लोगों के साथ उनके कष्ट के समय कोई सहानुभूति नहीं होती। वह उनके लिए ''केवल आपातकाल में'' परमेश्वर नहीं है।[6] परमेश्वर इच्छा के माने जाने की उम्मीद करता है, और वह घमण्ड से भरे हुए लोगों को दण्ड देने वाला है।

आयत 9. ''बहुत अन्धेर होने के कारण वे चिल्लाते हैं; और बलवान के बाहुबल के कारण वे दोहाई देते हैं।'' हेली ने सुझाव दिया है कि ''घनी अबादी वाले नगरों में सताए जाने वालों की चीख पुकार के सम्बन्ध में अपनी बात पर विशेष बल देते हुए लाचार लोगों को सताने वाले दुष्टों के बारे में कही गई अय्यूब की बात को संक्षिप्त करने का'' यह एलीहू का ढंग था (24:12)।''[7] ''अंधेर'' के लिए शब्द, *ᵃshuqim* (*आशुक्मि*), का अनुवाद ''जबर्दस्ती'' भी हो सकता है (देखें सभोपदेशक 4:1; आमोस 3:9)।[8]

आयत 10. उत्पीड़ित लोग दुहाई देते हैं परन्तु अपने **सृजने वाले परमेश्वर** के सामने नहीं (देखें भजन संहिता 95:6, 7; यिर्मयाह 2:8), चाहे केवल वही **रात में भी गीत गवाता है**। ये दुष्ट कष्ट सहने वाले परमेश्वर को नहीं मानते, वास्तव में वे अपनी जानकारी में परमेश्वर को रखने से इनकार करते हैं (देखें रोमियों 1:28–32)। परेशानी के समय में केवल वही उनसे गीत गवा सकता है (भजन संहिता 42:8; 77:1–6; प्रेरितों 16:25)।

आयत 11. '''जो हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक शिक्षा देता, और आकाश के पक्षियों से अधिक बुद्धि देता है?''' इस वचन का एक और सम्भावित अनुवाद है: ''जो हमें पृथ्वी के पशुओं *से* और आकाश के पक्षियों *से* सिखाता है हमें समझदार बनाता है'' (देखें 12:7–10; 38:39–39:30)। इब्रानी कविता में आम मिलने वाला कियॉस्टिक शब्द इस आयत में मिलता है। मूल वचन का क्रम ABBA के पैटर्न पर है।

A1: ''जो हमें शिक्षा देता''
    B1: ''पृथ्वी के पशुओं से अधिक''
    B2: ''आकाश के पक्षियों से अधिक''
A2: ''बुद्धि देता है।''

मैरविन एच. पोप ने टिप्पणी की है,

> यह स्पष्ट नहीं है कि यहां पर पशुओं से कौन सी शिक्षा मिलने की बात है। शायद एलीहू यह सुझाव देना चाहता था कि पशु अपनी आवश्यकता और निराशा के समय परमेश्वर के सामने दोहाई देते हैं [भजन संहिता 104:21; 147:9; योएल 1:20], इस कारण अय्यूब

को परमेश्वर को बुरा भला कहने के बजाय उन्हीं का अनुकरण करना चाहिए।[9]

आयत 12. ''वे दोहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर नहीं देता, यह बुरे लोगों के घमण्ड के कारण होता है।'' रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''यह आयत दुष्टों की प्रार्थना की परम्परागत समझ की श्रेष्ठ बात है।'' जब तक यह दोहाई मन फिराव न हो, तब तक परमेश्वर नहीं सुनता है।[10] एलीहू यह तर्क दे रहा था कि परमेश्वर की खामोशी अय्यूब के ''घमण्ड'' के कारण और मन फिराने की उसकी अनिच्छा के कारण थी।

आयत 13. दुष्ट कष्ट सहने वालों की **व्यर्थ बातें** (*shaw'e', शॉव*) बेकार हैं। यह विश्वासी जीवन से नहीं निकलतीं, न ही इससे उत्तर मिलता है।

आयत 14. ''तो तू क्यों कहता है, कि वह मुझे दर्शन नहीं देता, कि यह मुक़द्दमा उसके सामने है, और तू उसकी बाट जोहता हुआ ठहरा है?'' एच. एच. रोलवे ने समझाया है, ''यदि परमेश्वर उनकी नहीं सुनता जो उसकी ओर नहीं मुड़ते हैं, तो वह अय्यूब की कितनी कम सुनेगा जो उसके विरुद्ध शिकायत करता है।''[11] अय्यूब ने शिकायत की थी कि उसे परमेश्वर ''नहीं दिखाई पड़ता'' (देखें 9:11) और उसने कहा था कि उसका ''मुकद्दमा उसके सामने था'' (देखें 10:2; 13:6, 18; 23:4)। एलीहू बोलता जा रहा था और अय्यूब परमेश्वर की ओर से उत्तर मिलने की राह देख रहा था।

आयत 15. ''परन्तु अभी तो उसने क्रोध करके दण्ड नहीं दिया है, और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं लगाया।'' इस आयत के अर्थ और अनुवाद पर विवाद है। शायद एलीहू अभी भी अय्यूब की ओर से ही बात कर रहा था, जैसे आयत 14 में (देखें NIV; NJB; NCV)। अय्यूब ने पहले इस बात पर अफ़सोस किया था कि लोगों को आम तौर पर परमेश्वर की ओर से दण्ड नहीं दिया जाता।

आयत 16. ''इस कारण अय्यूब व्यर्थ मुँह खोलकर अज्ञानता की बातें बहुत बनाता है।'' एलीहू ने यही आरोप पिछले अध्याय के अंत में लगाया था (देखें 34:35)। व्यर्थ बातें ''बेकार'' या ''निरर्थक'' बातें हैं।[12] हेली ने अय्यूब के सम्बन्ध में एलीहू की स्थिति को संक्षिप्त किया: ''उसके भाषणों की निरर्थकता, घमण्ड का प्रभाव, उसकी दोहाई की व्यर्थता उनके सुने जाने के बीच रुकावट थी। इसलिए अय्यूब परमेश्वर को दोषी ठहराने के कारण दोषी था।''[13]

प्रासंगिकता

''भला करने से क्या फायदा?'' (35:3)

शायद हम सब ने यह सवाल पूछा है, ''भला करने का क्या लाभ है?'' शायद हम दूसरों के प्रति उदार और लिहाज रखने वाले थे पर उन्होंने हमारी नेकी नहीं जानी। शायद हमने दूसरों की सहायता करने के लिए पूरा जोर लगा दिया और बदले में हमें ताने और अपमान ही मिला, जिस कारण हम कहने लगे, ''भला करने का क्या फायदा हुआ?''

इस प्रकार का प्रश्न अध्याय 35 में खड़ा होता है। वहां पर एलीहू अय्यूब की ओर से कहता है, ''मुझे इससे क्या लाभ? मुझे पापी होने में और न होने में कौन सा अधिक अंतर है'' (35:3)। निराशा के पल में अय्यूब ने पहले ऐसा ही प्रश्न पूछा था: ''मैं तो दुष्ट ठहरूंगा फिर क्यों व्यर्थ

परिश्रम करूं'' (9:29)। हो सकता है कि भला करने के तुरंत, स्पष्ट प्रतिफल न हों पर हम यह आश्वस्त हो सकते हैं कि उनके बड़े लाभ होंगे।

आरम्भ में भला करना हमें परमेश्वर को भाने के योग्य बना देता है। परमेश्वर हमारा सृजनहार है, इस कारण हमें जीवन में अपनी लालसा उसे भाने की रखनी चाहिए। बहुत से बच्चे, कम से कम अपने बचपन के सालों में अपने माता-पिता को रिझाने का प्रयास करते हैं। इन बच्चो की तरह ही जो अपने माता-पिता को गौरवान्वित करना चाहते हैं, हमें चाहिए कि हम अपने स्वर्गीय पिता को गोर्वानित कर सकें। बच्चों को अपने माता-पिता की नकल करना भी अच्छा लगता है। जब हम वह कर रहे होते हैं जो अच्छा है तो हम परमेश्वर की नकल कर रहे होते हैं (देखें मत्ती 5:48; इफिसियों 5:1; 1 पतरस 1:15, 16)। मसीही लोगों को मसीह में प्रकट किए गए परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार दिया गया है जिस कारण, ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया'' (इफिसियों 2:10)। इब्रानियों के लेखक ने लिखा है, ''ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो, जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला'' (इब्रानियों 13:16)।

भला करने के लिए समर्पित होना हमें स्पष्ट विवेक देता है। कुछ लोगों को उनका दोष सताता रहता है। शायद वे उन पापों के कारण परेशान रहते हैं जो उन्होंने किए हैं। हो सकता है कि उन्हें इस बात का पछतावा हो कि उन्होंने दूसरों की सेवा करने के लिए परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए अवसरों का लाभ नहीं उठाया। इसके विपरित जो लोग सही काम करने में लगे रहते हैं उन्हें ऐसा अफ़सोस नहीं होता। पहले एक भाषण में, अय्यूब ने कहा था, ''मैं अपना धर्म पकड़े हुए हूँ और उसको हाथ से जाने न दूंगा; क्योंकि मेरा मन जीवन भर मुझे दोषी नहीं ठहराएगा'' (27:6; NIV)। मसीही व्यक्ति को बपतिस्मे के समय मसीह के लहू से धो दिया गया है (इब्रानियों 10:22)। वास्तव में बपतिस्मा ''शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने'' के लिए है (1 पतरस 3:21)। NIV में इस प्रकार से लिखा है, ''परमेश्वर के प्रति अच्छे विवेक का वायदा।'' मसीही बनने के बाद व्यक्ति को परमेश्वर के सामने शुद्ध विवेक रखते हुए, प्रतिदिन वफ़ादारी से रहना चाहिए। इब्रानियों 13:18 कहता है, ''हमारे लिए प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक शुद्ध है; और हम सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं।''

भला करके, हम दूसरों के सामने अच्छी मिसाल पेश करते हैं। लोगों का ध्यान हमारी ओर रहता है। यदि हमारे काम बुरे हैं तो हम दूसरों को परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के कार्य कर सकते हैं। यदि हमारा व्यवहार धर्मी है तो हम दूसरों को परमेश्वर के पीछे चलने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। पौलुस ने सुसमाचार प्रचारक तीमुथियुस को समझाया, ''कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा'' (1 तीमुथियुस 4:12; NIV)। हम चाहे जवान हो या बूढ़े, हम अनुसरण के लिए दूसरों के सामने सकारात्मक नमूना पेश कर सकते हैं। हम अपनी जिम्मेदारियों का सामना लगन तथा धीरज के साथ कर सकते हैं। हम अपनी बातों का इस्तेमाल दूसरों को आशीष देने तथा प्रोत्साहन देने के लिए कर सकते हैं। हम अपने पारिवारिक सम्बन्धों तथा प्रभु की कलीसिया के प्रति समर्पण के द्वारा वफ़ादारी का नमूना दे सकते हैं।

हमारे अच्छे नमूने से हमारे वैरियों के जीवनों में भी बदलाव आ जाएगा। पतरस ने अपने

साथी मसीहियों से कहा, ''अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें'' (1 पतरस 2:12)। उसने उनसे यह भी कहा, ''और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उनके विषय में वे जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं, लज्जित हों'' (1 पतरस 3:16)। धार्मिकता के हमारे कामों से हमारे आलाचेकों के मुंह बंद हो सकते हैं।

भलाई करके हम स्वर्ग में धन जमा करते हैं। कई बार हमें ऐसा लगता है कि हमारे प्रयासों का इस जीवन में कोई लाभ नहीं होगा, पर एक दिन उसका लाभ अवश्य होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम स्वर्ग में जाने के अपने मार्ग को कमा रहे हैं। परमेश्वर के साथ सहभागिता केवल मसीह के लहू के द्वारा ही सम्भव है। परन्तु इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर हमें विश्वास की गई हमारी सेवा का प्रतिफल देगा। इसके उलट कहना यीशु की शिक्षा का विरोध है जिसने अपने चेलों से कहा कि ''स्वर्ग में धन इकट्ठा करो'' (मत्ती 6:20)। सही काम करने के लिए सताए जाने वालों से उसने कहा, ''तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था'' (मत्ती 5:12)। परमेश्वर हमारे उन सब कामों को जो हम करते हैं जानता है। उन कामों को भी जो गुप्त में किए जाते हैं और वह हमें उनका प्रतिफल देगा (मत्ती 6:18)। यीशु ने वायदा किया, ''मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय 'वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा''' (मत्ती 16:27; देखें इफिसियों 6:8)।

''भला करने का क्या फ़ायदा है?'' हमें परमेश्वर की महिमा के लिए बनाया गया था और नया जन्म पाए हुए लोगों को भले काम करने के लिए ''नये सिरे से बनाया गया'' है। जो उसे पसंद हैं जब हम वह कर रहे होते हैं जो सही है तो हम अपने विवेक को चिंता से मुक्त कर देते हैं ओर रात को आराम से सोते हैं। इसके अलावा हम ऐसे उदाहरण पेश करते हैं जिनकी दूसरे लोग नकल कर सकें। अंत में परमेश्वर हमें वफ़ादारी से की गई उसकी सेवा के लिए आशीष देगा।

रात में गाए गए गीत (35:10)

रात का समय और खामोश हो सकता है। दिन के विपरीत, रात के समय आम तोर पर अधिक खामोशी होती है। गर्मियों के मौसम में रात की ठण्डी हवा दिन की चिलचिलती धूप से आराम दिलाती है। यह समय आराम करने का और सोने का होता है। परन्तु रात के समय को अंधेरे के साथ भी जोड़ा जाता है और यह बुराई और परेशानी का प्रतीक भी हो सकता है (देखें 24:13-17)। सी. एच. स्पर्जन ने कहा है,

> और रात कई तरह की होती है, जैसे ग़म की रात, जुल्म की रात, संदेह की रात, घबराहट की रात, परेशानी की रात, उदासी भरी रात, और अज्ञानता की रात। हर प्रकार की रात जो हमारे दिलोजान पर दबाव डालकर हमें दहशत में डाल देती है। परन्तु धन्य है परमेश्वर, कि मसीही व्यक्ति कह सकता है, ''मेरा परमेश्वर मुझ से रात में गीत गवाता है।''[14]

हमारा परमेश्वर हम से ''रात में गीत गवाता'' है। हमारी अंधकार भरी घड़ी में वह हमें

आशा का गीत देता है जो हमारे मनों के अंदर जोश भर देता है। यह गीत परमेश्वर की वफ़ादारी, सामर्थ और प्रेम के हो सकते हैं। वे उन सब कामों को याद करवा रहे हो सकते हैं जो परमेश्वर ने कालांतर में किए या उस काम का आनन्द दिलाने वाले हो सकते हैं जो वह भविष्य में करेगा।

पुराने नियम में, हबक्कूक को ''रात में एक गीत'' दिया गया था। यह नबी बड़ा परेशान था जब परमेश्वर ने उसे दिखाया कि वह दुष्ट बेबिलोनियों को उसके अपने लोगों अर्थात इस्राएलियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिए इस्तेमाल करेगा। यरूशलेम ने कबाड़ हो जाना था और यहोवा का मन्दिर नष्ट हो जाना था। सचमुच में यह एक काली रात होनी थी! हबबकूक की निराशा के बीच में भी परमेश्वर ने उसके मन में जोश दिलाने वाला एक गीत दिया, एक ऐसा गीत जो यहोवा की वफादारी और छुटकारे का गीत अर्थात परमेश्वर का गीत था।

> क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा। यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है, वह मेरे पांव हरिणों के समान बना देता है, वह मुझ को मेरे ऊंचे स्थानों पर चलाता है (हबक्कूक 3:17-19)।

नये नियम में पौलुस और सीलास नामक दो मिशनरियों ने रात में गीत ''गाए।'' ''मकिदूनी बुलाहट'' मिलने के बाद पौलुस और उसके साथ त्रोआस से फिलिप्पी में एजियन समुद्र के पार गए थे। उन्हें नगर के बाहर प्रार्थना करने का एक स्थान मिला था जहां उन्होंने लुदिया और उसके घराने के लोगों को वचन सिखाया और बपतिस्मा दिया था। जब सुसमाचार फैल रहा था तब पौलुस को एक दासी के द्वारा जिसमें भविष्य बताने की एक आत्मा थी रोक दिया गया। उस आत्मा को निकालने के बाद पौलुस और सीलास को उसके मालिक अदालत में ले गए। फिर प्रधान न्यायाधीशों ने आदेश दिया कि उन्हें छड़ियों से पीटा जाए। जख्मी और लहूलुहान पौलुस और सीलास को उनके पैरों काठ में ठोकर जेल में और भीतरी कोठरी (अत्यधिक सुरक्षा) में रखने के लिए ले जाया गया। पीड़ा और अन्याय के बावजूद, ये दोनों मिशनरी ''रात में गीत'' गा रहे थे। ''आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और क़ैदी उनकी सुन रहे थे'' (प्रेरितों 16:25)। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 463. [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 255. [3]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc, 1994), 304. [4]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 649. [5]हार्टले, 466. [6]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 344-45. [7]हेली, 305. [8]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 799. [9]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी,

न्यूॅ यॉर्कः डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 229. [10]आल्डन, 345.

[11]एच. एच. रोअले, *अय्यूब*, द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 290. [12]लुडविग कोहलर और वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट*, स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टनः ब्रिल, 2001), 1:236–37. [13]हेली, 307. [14]सी. एच. स्पर्जन, ''साँग्स इन द नाईट,'' द न्यू पार्क स्ट्रीट चैपल; साउथवार्क, इंग्लैंड; 27 फरवरी 1898 में दिया गया सरमन।